Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

भारतीय समाज में धर्म का सामाजिक प्रभाव

डॉ0 उपमा चतुर्वेदी

शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृत एवं पुरातत्व, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

Article Info
Volume 5, Issue 5
Page Number : 125-128
Publication Issue :
September-October-2022
Article History
Accepted : 01 Sep 2022
Published : 15 Sep 2022

शोधसारांश–धर्म एक समाज का दूसरे समाज से भिन्न होता। धर्म सामाजिक जीवन के बुनियादी ढाँचे में शामिल है इसलिए धर्म को सामाजिक न्याय का न्यायिक धर्म/कर्म माना जाना ही भारतीय समाज का सुव्यस्थित ढाँचा है।

मुख्य शब्द–भारतीय, समाज, धर्म, सामाजिक, न्याय, समाजिक जीवन।

यूँ तो धर्म को परिभाषित करना बेहद कठिन हैं। दुनिया के तमाम विचारकों ने इस सम्बंध में अलग–अलग मत दिये है उन सभी मतों का यदि लब्बोलुआब देखे तो धर्म को तात्पर्य है सृष्टि और स्वयं के हित और विकास में किये जाने वाले सभी कर्म ही धर्म है जैसा कि ऋग्वेद में ऋषि ने लिखा है–

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग भवेत्।।

अर्थात समस्त प्राणि सुख–शन्ति से पूर्ण हो, सभीरोग व्याधि से मुक्त रहे, किसी के भाग में कोई दुख न आये और सभी कल्याण मार्ग का दर्शन व अनुसरण करें।

भारतीय समाज में धर्म का सामाजिक प्रभाव कई तरह से देखा जासकता है–

(I) धर्म भारतीय समाज की एक प्राचीन परम्परा हैं धर्म को भारतीय जीवन का सर्वोच्च आदर्श माना जाता है।

(II) धर्म व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करता है, यह व्यक्ति के सुख समृद्धि के लिए धार्मिक नियमों के मुताबिक आचरण करने के लिए प्रेरित करता हैं।

(III) धर्म विवाहेत्तर जन्म, नशीली दवाओं और शराब की लत, अपराध और अपराधीपन जैसी सामाजिक समस्याओं को कम करता है।

(IV) धर्म व्यक्ति को जीवन के महत्व को समझाता हैं और पवित्र भावनाओं को पैदा करता हैं।

(V) धर्म, मानसिक तनाव और चिन्ताओं से दूर रखता है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

(VI) धर्म, गलत, समाज विरोधी और धर्म विरोधी कार्यों के प्रति घृणा पैदा करता है।

(VII) धर्म, रीति–रिवाज, पूजा और अन्य धार्मिक गतिविधियों के जरिए सामाजिक जीवन को प्रभावित करता हैं।

क्योंकि भारत में धार्मिक मान्यताओं की जटिलता और विधिवता दोनों ही देखने को मिलता है भारत की 2011 की जनगणना सात समुदायों हिन्दू 79.80%, मुस्लिम 14.23%, ईसाई 2.30%, सिख 1.72%, बौद्ध 0.70%, जैन 0.37%, अन्य धर्म और सम्प्रदाय 0.66%, जिन्होंने अपना धर्म नहीं बताया गया 0.24% की गयी।

भारत में 'धर्म' अपने आपमें ही पूरा देश है यही कारण है कि इसपर बहस सतत जारी है 'द रिलीजन ऑफ इण्डिया (1958) में मैक्स बेबर ने कहा कि 'हिन्दू धर्म' शब्द एक पश्चिमी शब्द निर्माण है यह कोई धर्म नहीं 'बेबर' के अनुसार 'हिन्दू' शब्द भारत में ब्रिटिश उपविशों द्वारा शुरू की गयी जनगणना में प्रयुक्त एक अधिकारिक पदनाम हैं। यह शब्द धर्म के बजाय धार्मिक एक अधिकारिक पदनाम हैं। यह शब्द धर्म के बजाय धार्मिक समूह के लिए प्रयोग किया गया है।

जबकि धर्म का महत्व बताते हुए डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्वीकारते है– 'ईश्वर में मानव प्रकृति अपनी पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त करती है।' मनुष्य में अनेक सामाजिक तथा मानवीय गुणों का विकास होता है। गौरतलब है कि सामाजिक नियंत्रण की दृष्टि से धर्म का सामाजिक महत्व बढ़ जाता हैं। आज का दौर भूमण्डलीकरण का दौर है बाजार का दबाव धर्म पर हावी होता जा रहा है। सूचना और संचार क्रान्ति ने मानव जीवन शैली को नयी दिशा दी है। किसी चिन्तन पद्धति की उपयोगिता की समीक्षा की जा रही है इस सुविधा सम्पन्नता के दिखावटी रूप से भौतिक पक्ष हावी है किसी गम्भीर, तात्विक, सर्वथा नए कल्पना करना कठिन है अतः परम्परा को ही खंगाल कर कुछ नवीन कहा जाए तो शायद काम बन जाए। भारतीय मानस को प्रस्तुत करने वाले दो ग्रंथों को समाज में बड़ी प्रतिष्ठा मिली हुई है पहली रचना श्री रामचरितमानस, दूसरी रचना श्रीमद्भगवतगीता है दोनों ही गेयकाव्य है।दोनों ही काव्यों की रचना में दिव्य पुरुषों का योगदान हैं। अर्जुन के मोह को समाप्त करने के लिए श्रीकृष्ण द्वारा उपदेश काव्य 'गीता' है। तुलसीदास ने रामचरितमानस की कथा रचियता भंगवान शंकर को माना है।

'गीता' निर्माण का मूल कारण अर्जुन मोह है श्रीरामचरितमानस के लंकाकाण्ड में धर्ममय रथ प्रसंग विभीषण की शंका है दोनों व्यक्तियों की शंकाओं का समाधान दिव्य पुरूष ही करते है। श्रीकृष्ण गीता उपदेश से और 'धर्ममयरथ' के रूप में विभीषण की शंका का समाधान करते है। धर्म स्थापना दोनों ही

कृतियों का प्रमुख उद्देश्य माना जा सकता है। दोनों प्रसंग मानवीय कार्यों, विचारों और सन्दर्भों की नवीन दृष्टि से देखने का प्रयास करते हैं।

श्रीरामचरितमानस के लंकाकाण्ड में राम–रावण युद्ध से पूर्व विभीषण ने राम को रथविहीन देखकर पूछा–

'नाथ न रथ नहि तन पद ताना।
केहि विधि जितब वीर बलवाना।।'

यहाँ विभीषण की शंका अर्जुन के मोह से मेल खाती है। यहाँ राम कर्म करने वाले है विभीषण रावण के रथ और रणकौशल से परिचित है रावण दिग्विजयी है उसके सामने राम का रथ से हीन और शरीर तथा पैरों में सुरक्षा कवच नहीं होने से विभीषण की चिन्ता स्वाभाविक है।

राम ने जिस रथ को प्रस्तुत किया है वह सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बिना मानवीय पक्ष को आत्मसात् किये युद्ध जीता जा सकता है पर मानवीयता हार जायेगी इसका सबसे अच्छा अमेरिकी सेना अफगनिस्तान और ईराक जीत होकर भी हार हो सकती है।

इसी तरह प्राचीन भारत में हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्मावलंबियों का विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों, दार्शनिक परम्पराओं तथा आचार प्रणाली का चिन्तन के विकास में उल्लेखनीय योगदान है। ईसा की पहली सदी में केरल प्रदेश के तटवासियों पर ईसाई धर्म का आरंभिक प्रभाव पड़ चुका था। सातवीं सदी के बाद भारत इस्लाम धर्म के सम्पर्क आया। भारतीय सामाजिक चिंतन पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि एक ओर तो विभिन्न क्षेत्रों नृजातियों, भाषा–भाषियों और धर्मावलंबियों की अपनी विशिष्टताएँ है जो उनके चिन्तन में दिखायी पड़ती है। दूसरी ओर सदियों के ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक सम्पर्क, पारस्परिकता तथा अतः क्रिया के बीच में विनियम तथा समन्वय की प्रक्रिया भी प्रस्फुटित होती रही है इसके फलस्वरूप भारत में समान सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाएँ विकसित हुई। एक स्थान अथवा समय विशेष में विकसित धार्मिक तथा दार्शनिक विचारों का सम्पूर्ण देश में दीर्घकालीन प्रभाव पड़ता रहा। इस तरह एक ओर तो निजत्व और वैशिष्ट एवं दूसरी ओर सम्पर्क तथा समन्वय दोनों तरह की चिन्तन परम्परा भारत में दिखाई पड़ती है।

भारतीय समाज में सामाजिक विधान, अनुभवाश्रित ज्ञान और अन्वीक्षा की परम्परा के उपरांत भी सामाजिक चिंतन पर धार्मिक पदानुक्रम, कर्मकाण्ड और अमूर्त सिद्धांत का प्रभाव दिखाई पड़ती है। कहने का अर्थ है कि मनुष्य के सामूहिक रूप में दैनिक जीवन के सभी पहलू जैसे शिक्षा राजनीति और अर्थशास्त्र आदि मिलकर समाज का निर्माण करते हैं। 'धर्म' और धर्म दैनिक जीवन के पहलुओं को प्रभावित करता हैं।

प्रत्येक समाज में धार्मिक विश्वास, अनुष्ठान और संगठन होते है। जहाँ धर्म मनुष्यों को एकजुट करता है। धर्म समाज में उत्पादन के संसाधनों के असमान वितरण ओर उत्पीड़न का पक्षधर है तथा धर्म दमन के विरूद्ध संघर्ष और इसकी रोक थाम के उपाय बताता है गौरतलब हैं कि भारतीय समाज धर्म, प्रेम, स्नेह और एकजुटता का संदेश देता है। परन्तु समाज में लोग धर्म के नाम पर आपस में लड़ रहे हैं। क्योंकि धर्म एक समाज का दूसरे समाज से भिन्न होता। धर्म सामाजिक जीवन के बुनियादी ढाँचे में शामिल है इसलिए धर्म को सामाजिक न्याय का न्यायिक धर्म/कर्म माना जाना ही भारतीय समाज का सुव्यस्थित ढाँचा है।

सन्दर्भ सूची

1. भारतीय सामाजिक व्यवस्था– राज अहूजा (1995)
2. विकिपीडिया डॉट कॉम– 1
3. दृष्टि आई.ए.एस.
4. धर्म और समाज– रामचन्द्र ठाकरान